# कला, कलाकार और कलात्मक अनुभूति

एक अप्रतिम योग और एक सुखद एहसास –संगीत गॅलेक्सी से जुडने का। गुणवत्ता के लिए अमित जी का अथक परिश्रम। रचनाकारों की उच्चस्तरीय रचनाओं का संकलन, टाइपिंग प्रिंटिंग में पूर्ण सावधानी। संगीत गॅलेक्सी का सारा परिवार प्रशंसा का पात्र है।

जिंदगी तो वक्त की गाड़ी पर बैठ आगे सरकती जाती है। जीवन के बीतते क्षणों को चाहे वे मधुर हों या उदासी से भरे हों या कटु हों अथवा गौरवपूर्ण हों– यदि उन क्षणों को कला के माध्यम से समेट नहीं पाये तो वे अतीत के 'आकर' में लुप्त हो जायेंगे, कितना बड़ा नुकसान मानव इतिहास को होगा।

कला सौंदर्य निर्मिति की प्रक्रिया है। जीवन के क्षण कैसे भी हों जब कलाकार उन क्षणों को अपनी कला में बांध लेता है तो वे आनंद के स्त्रोत बन जाते हैं। सबेरे सबेरे की कडाके की ठंड में रास्ते पर बैठे कांपते, ठिठुरते चिथड़ों में अपने को लपेटे भिखारी को देख निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी) अपनी कीमती पश्मिना शॉल उस भिखारी के कांपते शरीर पर डाल देते हैं और अपने वेदनाग्रस्त मन में थोड़ी सी संतोष की साँस ले लेते हैं।

पर जब कोई कलाकार उस भिखारी को अपने ब्रश और रंग से एक Realistic पेंटिग में चित्रित करता है और किसी पेंटिंग की प्रदर्शनी में रखता है तो हर एक दर्शक के चेहरे पर आनंद से भरी आश्चर्यानुभूति का भाव परिलक्षित होता है, निराला की तरह वेदनाग्रस्त नहीं होता। यही तो कला का काम है। कांटों की सेज पर पड़े कवि को खून से लथपथ चिल्लाते हुए आप देखते हैं तो पीड़ा से कांप जाते हैं और जब कवि अपनी काव्य कला के माध्यम से अपनी पीड़ा व्यक्त करता है तो आप आनंद की अनुभूति करने लगते हैं।

O Lift me as a wave a Cloud a leaf;

I fall upon the thorns of Life,

I bleed.

हम पढ़ते हैं और हमारी जुबान से वाह निकल जाता है, शब्दों के चित्र को देखकर हम भी कल्पना के आईने में उस चित्र को देखने लगते हैं और आनंद से उद्वेलित हो जाते हैं। है ना कमाल कलाकर का और उसकी कला प्रक्रिया का।

कला मानव जीवन का, मानव जीवन का ही क्यों संपूर्ण निर्मिति का सौंदर्यात्मक इतिहास है, जिसकी मानव समाज को अत्यंत आवश्यकता है। वह तो दुख–सुख के अवगुंठन में से गुजरती जिंदगी का खजाना है– धरोहर है जो सदा आनंद ही आनंद देती रहती है, पथ प्रदर्शन करती रहती है, चिंतन के लिए प्रेरित करती है। हमारी उदासी के रेगिस्तान में हरित भूमि का काम कर जाती है।

कलाकर की सृजनशीलता, उसके कलात्मक प्रयत्नों की अभिव्यक्ति हैं। सहस्त्र वर्षो से जो भी Classics हम पढ़ते आ रहे है वे हमें कभी भी थकाते नहीं, ''बोर'' नहीं करते चाहे कितनी ही बार हम पढें, देखें या गायें। उलट वे हमारी सृजनशीलता को जागृत करते हैं, प्रेरित करते हैं और हम आनंद की अनुभूति करते रहते हैं। कवि बायरन सही कहते है–

"….a thing of beauty is a joy forever."

प्रस्तुत अंक भी इस तथ्य की पुष्टि करता है। संगीत के सभी संबन्धित विषयों पर लिखे गए अध्ययनपूर्ण, गहन चिंतनशीलता से ओतप्रोत लेखों का संकलन एक अभूतपूर्व संगम है। यह पाठकों के लिए निश्चित ही आत्मिक, बौध्दिक व उपयोगी दस्तावेज सिध्द होगा।

अंत में संगीत के आकाश में "Sangeet Galaxy" कहकशां की तरह अपना अस्तित्व बनाए दिखाई देगी, जो भी रचनाएं प्रकाशित होंगी दैदीप्यमान सितारों की तरह सबको प्रकाशित करेगी, अपनी कलात्मकता के माध्यम से अपनी कलानुभूतियों को व्यक्त कर प्रसन्नता प्रसारित तो करेगी ही साथ ही दिशानिर्देश का भी काम करेगी। मेरा विश्वास है रचनाकार अपनी ओजस्वी रचनाओं से पाठकों को प्रभावित कर अपना दायरा बढ़ाते जायेंगे।

डॉ. मोनाली जे. मसीह
असिस्टंट प्रोफेसर
दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय,
नागपूर
Email- monalimasih@gmail.com